स्वामी विवेकानंदजी के दार्शनिक विचारो में अध्ययन मुकित

डॉ. प्रीति जे. राठोड
अध्यापिका,
वैधश्री एम् एम् पटेल कोलेज ऑफ़ एज्युकेशन,
गुलबाई टेकरा,अहमदाबाद.

सारांश

भारतीय मनीषीयों, शिक्षाशास्त्रीयों और भारतीय दार्शनिकोंने दूरदर्शिता से शिक्षा द्वारा भारत का विकास किया | भारत की शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठता प्राप्त करने में युवा पुरुष स्वामी विवेकानंद का योगदान प्रमुख रहा है | संपूर्ण विश्व में शायद ही कोई ऐसा व्यकित मिलेगा जिसने स्वामी विवेकानंद का नाम नहीं सुना है | स्वामीजी के रूप में प्रख्यात विवेकानंद ने भारत के जनसमुदाय की सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को निकट से देखा तथा समजा था| इसी जानकारी के आधार पर उनके दार्शनिक चिंतन का उद्दभव हुआ और इसी आधार पर उन्होंने शिक्षा सबंधी अपने दार्शनिक विचार प्रस्तुत किये है | इसका अभ्यास करने पर यह दिखाई पड़ता है की प्रत्येक तत्वों में शिक्षा मुकित के पक्ष को उजागर किया है| प्रस्तुत अभ्यासपत्र में स्वामी विवेकानंदजी के दर्शन सबंधी तत्त्वों की अध्ययन मुकित के संदर्भ में चर्चा की गई है |

1. प्रस्तावना

संतो,वीरो एवं साहित्यकारों की भूमि बंगाल से दर्शन,धर्म एवं संस्कृति की पवन त्रिवेणी प्रवाहित करनेवाले स्वामी विवेकानंद का जन्म ऐसे वातावरण में हुआ की उनमे धार्मिक भावना की उदभावना हुई | स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने अनेक शिष्यों का निर्माण किया जिनमे प्रमुख थे स्वामी विवेकानंद | स्वामी विवेकानंद का जन्म १२,फरवरी, सन १८६३ ई. प्रसिध्ध वकील श्री विश्वनाथ दत्त के यहाँ हुआ था | नामकरण के समय उनका नाम नरेन्द्रनाथ रखा गया | बचपन में नरेन्द्रनाथ बहुत चंचल थे | नरेन्द्रनाथ की स्मरण शकित अत्यन्त प्रखर थी | निरन्तर ६ वर्ष तक स्वामी रामकृष्ण परमहंस के संपर्क ने स्वामी विवेकानंद में चिंतन के नये द्वार खोले और शनैः शनैः अपनी साधना, तपस्या, चिंतन एवं अध्ययन से नरेन्द्रनाथ स्वामी विवेकानंद बन गये | स्वामी विवेकानंद ने अपने व्याख्यानों एवं चिंतन से यह सिध्ध करने का सफल प्रयास किया की यदि वेदान्त को आधुनिक आवश्यकताओ एवं मूल्यों से जोड़ा जाए तो भारत की अनेक समस्याओ का समाधान संभव है | स्वामी विवेकानंद ने देश-विदेश घूमकर भारतीय संस्कृति को उसके सही रूप में लोगो के सामने रखने का प्रयास किया |

स्वामीजी के रूप में प्रख्यात विवेकानंद ने भारत के जन-समुदाय की सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियो की निकट से देखा तथा समझा था | इसी जानकारी के आधार पर उनके दार्शनिक चिंतन का उद्दभव हुआ और इसी आधार पर उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी अपने दार्शनिक विचार प्रस्तुत किये है | इसका अभ्यास करने पर यह दिखाई पड़ता है की प्रत्येक तत्वों में शिक्षा मुकित के पक्ष

को उजागर किया है | प्रस्तुत अभ्यासपत्र में स्वामी विवेकानंदजी के दर्शन सम्बन्धी तत्त्वों की अध्ययन मुकित के संदर्भ में चर्चा की गई है |

१) शिक्षा की परिभाषा

स्वामीजी ने शिक्षा की जो परिभाषा दी वे इस प्रकार है - "शिक्षा मनुष्य की अंतनिर्हित पूर्णता की अभिव्यकित है"| स्वामी विवेकानंदजी के मंतव्यानुसार मनुष्य में जन्म से ही पूर्णत्व होता है | शिक्षा जन्मोजन्म पूर्णता के अविष्कार की प्रक्रिया है |

वे मानते थे की मनुष्य में कुछ शकितर्यां विद्यमान होती है | शिक्षा द्वारा इन शकितर्यां का विकास करने से पूर्णता प्राप्त की जा सकती है | शिक्षा की मदद से व्यकित अपनी अंदर रहे ज्ञान की खोज करता है और उसे प्राप्त करता है | प्रत्येक बच्चा सहजरूप से विकसित होता है | हम तो केवल उसकी देखभाल करते है, उसे योग्य पूर्णता को प्रकट करने की और इच्छा शकित का सार्थक करने की प्रक्रिया है | मनुष्य परमात्मा का अंश है जन्म से ही पूर्ण है और शिक्षा द्वारा इस पूर्णता को प्रज्वलित करता है | इस में मुकत शिक्षा दिखाई देती है |

२) शिक्षा के उद्देश्य

१) मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, धार्मिक, नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक और व्यावसायिक विकास करना |
२) मनुष्य की मुकित के सबंध में सचेत करना और यह बताना की उसे अपनी शकितयों का उपयोग मुकित पाने के लिए करना चाहिए |
३) मनुष्य में आत्म-विकास, आत्म-श्रध्धा, आत्म-त्याग, आत्म-नियत्रंण, आत्म निर्भरता, आत्म-ज्ञान, आदि अलौकिक सदगुणों का विकास करना |
४) विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान जर्हा हमें दक्षता, क्षमता तथा द्रढता प्रदान करते है, वही आधुनिक समाज उनकी सहायता से प्रगति करता है,समुध्धि प्राप्त करता है |
५) शिक्षा का उदेश्य तो मानव में महान विचार शकित का विकास करना है | विचार शकित के द्वारा ही मानव अच्छे-बुरे, ऊँच-नीच, सहयोग-असहयोग, न्याय-अन्याय आदि में अन्तर करने में समर्थ हो जाता है |
६) मनुष्य में मानव-प्रेम,समाज-सेवा विश्व-चेतना और विश्व-बंधुत्व के गुणों का विकास करना |
७) मनुष्य की आंतरिक एकता को बाहय जगत में प्रकट करना ताकि वह अपने आप को भली-भांती समझ सके |
८) स्वामीजी शिक्षा द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर समान बल देते है | उनका स्पष्ट मत था की मनुष्य का भौतिक विकास आध्यात्मिकताकी पृष्ठभूमि में होना चाहिए और अनुपम का आध्यात्मिक विकास भौतिक विकास के आधार पर होना चाहिए |

हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है मन की शकित बढती है,बुध्धि का विस्तार होता है और जिसके द्वारा मनुष्य आत्मनिर्भर बन जाता है बस यही मुकत शिक्षा है |

३) पाठ्यक्रम

स्वामी विवेकानंदजी ने अपने दार्शनिक विचारो से सम्बंधित जो पाठ्यक्रम बनाया वे इस प्रकार है |

• समन्वयवादी द्रष्टिकोण : विज्ञान और वेदान्त

विवेकानंदजी की शिक्षा-प्रणाली की उपर्युकत विवेचना से यह स्पष्ट होता है की इस क्षेत्र में उनका द्रष्टिकोण समन्वयवादी है | यह समन्वयवादी द्रष्टिकोण पाठ्यक्रम के विषय में और भी अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ता है | वे बालक की शिक्षा के लिए ऐसे पाठ्यक्रम को आवश्यक मानते है जिससे उसके व्यक्तित्त्व के सभी पहलूओं के विकास का अवसर मिले | जहां एक और उन्होंने विज्ञान की शिक्षा को आवश्यक माना है वही दूसरी ओर वेदान्त की शिक्षा पर भी जोर दिया है | उनका कहना था की आज देश में विज्ञान और वेदान्त के समन्वय की आवश्यकता है | पाश्वात्य विज्ञान का भारतीय वेदान्त से समन्वय किया जाना चाहिए | एसा न होने पर विज्ञान ने हमें जो अवकाश एवं सुविधाए दी है,उनका समुचित उपयोग नहीं होगा | वेदान्त के अभाव के कारण ही विज्ञान के द्वारा भंयकर हिंसक साधको का आविष्कार किया गया | वेदान्त की शिक्षा से ही विज्ञान को मानव-जगत में शांति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है |

• कला की शिक्षा

विज्ञान के साथ-साथ विवेकानंदजी ने कला की शिक्षा को भी आवश्यक माना है | यह कला जीवन का अनिवार्य अंग है | विवेकानंदजी के शब्दों में "एशियावासीयो की आत्मा ही कला में है | एशियावासी कीसी भी कला-रहित वस्तु का उपयोग नहीं करते,क्या वे नहीं जानते की कला हमारे लिए धर्म का ही एक अंग है" इस प्रकार विवेकानंदजी ने उपयोगिता के आदर्श के स्थान पर कला के आदर्श को स्थापित करने की सलाह दी |

• संस्कृत भाषा

विवेकानंदजी ने अपने पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा पर विशेष जोर दिया है | यूँ तो वे मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का समर्थन करते थे,किन्तु भारतीय संस्कृति का भंडार संस्कृत भाषा में ही है इसलिए वे इस भाषा का ज्ञान सबके लिए आवश्यक मानते थे | उन्होंने कहा था की संस्कृत की ध्वनिमात्र ही जाति को शकित,क्षमता और प्रतिष्ठा प्रदान करती है | संस्कृत के माध्यम से ही हमें प्राचीन परम्परा और संस्कृति का ज्ञान हो सकता है | संस्कृत के अभाव में भारतीय संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती | विवेकानंद के इन विचारो से सभी आधुनिक भारतीय शिक्षा शास्त्री सहमत है | संस्कृत की आवश्यकता पर जोर देते हुए विवेकानंदजी ने कहा था," यदि आप प्रादेशिक भाषा में जनसामान्य को शिक्षा प्रदान करते है और विचारो से अवगत कराते है तो केवल जानकारी ही प्राप्त कर पाएगे किन्तु केवल यही एक मात्र उदेश्य नहीं है | उन्हें संस्कृति भी देने की आवश्यकता है | भले ही समाज विकसित और उन्नत हो जाए,किन्तु जनसाधारण में संस्कृत भाषा के प्रचार के बिना समाज की विकसित अवस्था में स्थायित्व नहीं आ सकता" |

• सर्वमान्य भाषा

संस्कृत भाषा के साथ-साथ विवेकानंदजी ने देश में एक सर्वमान्य भाषा की शिक्षा भी आवश्यक मानी है देश की एकता के लिए वह आवश्यक है की प्रादेशिक भाषाओं के साथ-साथ एक अखिल

भारतीय भाषा का विकास किया जाये | इस द्रष्टि से विवेकानंदजी के विचारों से हिंदी के प्रचार का पक्ष पुष्ट होता है |

• प्रादेशिक भाषाओ को प्रोत्साहन

अखिल भारतीय सामान्य भाषा के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रो में प्रादेशिक भाषाओं को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए | वास्तव में प्रत्येक प्रदेश के बालक-बालिकाओ की प्राथमिक शिक्षा तो प्रादेशिक भाषा के माध्यम से ही होनी चाहिए |

• शारीरिक शिक्षा

विवेकानंदजी का साम्यवादी द्रष्टिकोण शारीरिक शिक्षा पर बल देने में प्रकट होता है | इस द्रष्टि से सभी समकालीन भारतीय शिक्षा दार्शनिकों ने एक ही प्रकार के विचार उपस्थित किये है | शारीरिक शिक्षा के बिना आत्मसाक्षात्कार अथवा चरित्र निर्माण नहीं हो सकता | विवेकानंदजी ने अपने एक वार्तालाप में कहा था, "आपको शरीर को अत्यधिक बलशाली बनाने की विधि जाननी चाहिए और दूसरो को भी उसकी शिक्षा देनी चाहिए | क्या आप मुझे अभी प्रतिदिन डम्बेल्स के साथ व्यायाम करते हुए नहीं देखते ?शारीर और मन दोनों को समान रूप से शक्तिशाली बनाना होगा" विवेकानंदजी शकित के पुजारी थे| वे किसी भी तरह की कमजोरी के विरुद्ध थे उन्होंने कहा था- "शकित ही जीवन और दुर्बलता ही मृत्यु है | शकित हर सुख है अजर अमर जीवन है,दुर्बलता कभी न हटनेवाला बोझ और यंत्रणा है,दुर्बलता ही मृत्यु है |" इसी लिए विवेकानंदजी ने नवयुवको के लिए गीता पठने से अधिक फुटबोल खेलना जरुरी माना है|शरीर में शकित रहने पर ही व्यकित आध्यामिकता को समझ सकता है और उसकी और बढ़ सकता है |

• धार्मिक शिक्षा

भारतीय शिक्षा-शास्त्रियों ने प्राचीनकाल से ही शिक्षा में धार्मिक और आध्यात्मिक तत्व पर जोर दिया है | फिर विवेकानंदजी तो स्वामी और महात्मा ही थे | भारत के संतो की परम्परा में उनका अद्रितीय स्थान है और देश के बाहर उनको जो ख्याति मिली उसका उदाहरण दूसरा नहीं है | विवेकानंदजी के अनुसार - "धर्म शिक्षा का अंतिम आधार है | मेरा तात्पर्य धर्म के बारे में मेरी अपनी या किसी अंध की राय से नहीं है" |विवेकानंदजी ने धार्मिक शिक्षा पर विशेष तोर से जोर दिया गया है | पश्चिम के विज्ञान का सर्मथन करते हुए भी वे धर्म शिक्षा आवश्यक मानते है ; क्योकि मूल रूप से दोनों का आधार एक ही है | इन्होने तो यहा तक कह दिया है की विभिन्न विज्ञानो के शिक्षण के साथ साथ ही और उन्ही के माध्यम से धर्म की शिक्षा भी दी जा सकती है | उनके अपने शब्दों में "आधुनिक विज्ञान की सहायता से उनके ज्ञान को जगाईये | उनको इतिहास.भूगोल,विज्ञान और साहित्य की शिक्षा दीजिए और इनके साथ-साथ इनके माध्यम से धर्म के महान सत्य बताईये" |

स्वामीजी का कहना था की केवल आध्यात्मिक ही नहीं भौतिक विकास भी होना चाहिए | इसके लिए इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, राजनीतीशास्त्र, अर्थशास्त्र, तकनिकी शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि विषयों को भी पाठ्यक्रम में उचित स्थान देने के वे समर्थक थे | स्वामीजी विदेशी भाषा की शिक्षा के समर्थक थे पर मातृभाषा की प्रधानता देने की आवश्यकता सदैव अनुभव करते थे |

स्वामीजी का पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में विचार था की छात्रों को पाठ्यक्रम के माध्यम से अतीत के प्रति आदर वर्तमान की चुनौतियाँ एवं संघर्ष के लिए सक्षम तथा भावी जीवन को सुखद एवं सुंदर बनाने में समर्थ बनाना चाहिए | पाठ्यक्रम सैद्धान्तिक ही नहीं व्यवहारिक भी होना चाहिए तथा वह व्यकित को पूर्णता की ओर अग्रसर करने के सहायक होना चाहिए | स्वामी विवेकानंदजी के दार्शनिक विचारो से सम्बन्धीत पाठ्यक्रम में विज्ञान और वेदान्त की शिक्षा, कला की शिक्षा, संस्कृत भाषा की शिक्षा, प्रादेशिक भाषा और सर्वमान्य भाषा, शारीरिक शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा में अध्ययन मुकित द्रष्टिगोचर होती है |

४) शिक्षण विधियाँ

स्वामीजी केवल मन की एकाग्रता को ज्ञान की प्राप्ति का एक मात्र मार्ग बतलाया | मन की एकाग्रता द्वारा ही शिक्षण हो सकता है | जैसे एक रसायनशास्त्री अपनी प्रयोगशाला में मन की सारी शकितयाँ को एकाग्र करके ही सफलता प्राप्त कर सकता है | स्वामी विवेकानंदजी के मत में ज्ञान प्राप्त करने की एक मात्र विधि है-"एकाग्रता" | जीतनी अधिक एकाग्रता की शकित होगी,उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा | उनके अनुसार -

१) ज्ञान को समन्वित करके प्रस्तुत करना |
२) तर्क,व्याख्यान,विचार,विमर्श तथा उपदेश-विधि द्वारा ज्ञान का अर्जन करना |
३) केन्द्रीकरण विधि द्वारा मन की एकाग्र करना |
४) अनुकरण विधि के द्वारा छात्रों के चरित्र का विकास करना |
५) छात्रों को उचित मार्ग पर ले जाने के लिए व्यकितगत निर्देशन और परामर्श विधि का प्रयोग करना|

स्वामीजी स्वयं शिक्षक थे | उन्होने देश-विदेश में लोगो को वेदान्त की शिक्षा दी थी और उन्हें आधार किया में प्रशिक्षित किया था,अत: अपने अनुभव के आधार पर स्वामीजी ने विभिन्न शिक्षण विधिर्या को प्राथमिकता दी जो इस प्रकार है -

१) योग-विधि द्वारा चित्त की वृत्तिर्या का निरोध करना |
२) केन्द्रीकरण विधि द्वारा मन को एकाग्र करना |
३) तर्क, व्याख्यान, विचार-विमर्श, उपदेश विधि आदि द्वारा ज्ञान का अर्जन करना |
४) अनुकरण विधि द्वारा शिक्षक के उत्तम चरित्र,गुणों आदि का अनुकरण करना |
५) व्यकितगत निर्दशन और परामर्श विधि द्वारा छात्र को उचित मार्ग पर अग्रेसर करना |

अध्ययन-अध्यापन प्रवृति के बारे में स्वामीजी अपने अलग विचार रखते थे | उनकी अध्ययन-अध्यापन पद्धति आध्यात्मिकताके तरफ ले जानेवाली पध्धति है | इस पद्धति में रटने को स्थान नहीं परंतु छात्रो को एकाग्रता पर बल दिया है | यौगिक द्वारा चित्त-वृत्तिर्यो को नियंत्रण करना एकाग्रता द्वारा मन को एकाग्र करना इस शिक्षा विधिर्या में शिक्षा मुकित का अनुभव होता है |

५) शिक्षा संबंधी सिध्धांत

१) विधार्थी को व्यावहारिक प्रशिक्षण देना चाहिए |
२) जहाँ तक हो सके विद्यार्थी काल में ब्रहमचर्य का पालन करना चाहिए |

३) व्यकित को स्वयं पर अनुशासन रखना आवश्यक है |
४) व्यकित के विचार एवं आचरण में समन्वय होना चाहिए |
५) छात्र सर्वांगीक विकास कर सके, ऐसी शिक्षा होनी चाहिए |
६) इस बात का स्मरण रखना चाहिए की छात्र को कोई सिखा नहीं सकता वह स्वयं ही सिखता है|
७) ज्ञान तो व्यक्तिमें पहले से ही है | उपयुकत वातावरण की आवश्यकता होती है |
८) छात्रो के साथ-साथ छात्राओं की शिक्षापर भी समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए |
९) शिक्षक एवं शिष्य के बिच गहरा संबंध होना चाहिए तथा शिक्षक को शिष्य के साथ स्नेह एवं सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना चाहिए |
१०) छात्र के आध्यात्मिक विकास के साथ ही भौतिक विकास पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है|
११) देश के औधोगिक विकास के लिए तकनीकी शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए |
१२) देश के निरक्षर लोगों को शिक्षित करने का प्रयास करना चाहिए |

स्वामीजी ने दिये शिक्षा सिध्धांतो में व्यावहारिक प्रशिक्षण,ब्रह्मचर्य का पालन,स्वयं पर अनुशासन व्यकित के विचार एवं आचरण में समन्वय छात्रों का सर्वांगीक विकास,व्यकित को शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण की आवश्यकता, छात्र और छात्राओं की शिक्षा में समानता, शिक्षक-शिष्य का गहरा सबंध, भौतिक विकास और निरक्षर लोगो को शिक्षित बनाना इत्यादि में शिक्षा मुकित की बात स्पष्ट होती है |

६) गुरु शिष्य सम्बन्ध

स्वामीजी के अनुसार शिक्षा देने में गुरु का बड़ा महत्त्वपूर्ण योग होता है | बिना गुरु के विधार्थी का सही मार्गदर्शन संभव नहीं | गुरु में तीन बातें अवश्य होनी चाहिए |

१) गुरु अपने विषय का विद्रान हो | जिस विषय की वह शिक्षा देता हो उसके सम्बन्ध में उसे पूरी जानकारी हो तथा शिष्य के मन में उठनेवाली किसी भी शंका का पूर्ण समाधान करने में वह समर्थ हो | इतना ही नहीं गुरु को शिष्य की आत्मा में प्रवेश कर उसमे ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करना चाहिए | गुरु की विद्रता शिष्य के लिए वरदान बनती है |
२) गुरु चरित्रवान होना चाहिए | इसका सीधा अर्थ यह है की उसका आचरण ऐसा आदर्श होना चाहिए जिसका अनुकरण कर शिष्य अपने जीवन को भी उत्कृष्टता की ओर ले जा सके | गुरु स्वयं उच्च आदर्शों का उत्कृष्ट उदाहरण होना चाहिए | उसके ज्ञान इच्छा एवं क्रिया में कोई भिन्नता नहीं होनी चाहिए | जो वह कहें वह स्वयं वैसा ही आचरण करे तभी शिष्य के सम्मान का पात्र बन सकेगा |
३) गुरु का व्यवहार प्रत्येक शिष्य के साथ पितृत्व भावपूर्ण होना चाहिए | प्रत्येक शिष्य के प्रति स्वाभाविक प्रेम तथा उसे आगे बढ़ाने की भावना शिष्यों को उसमे दिखायी देनी चाहिए | उसे किसी स्वार्थवश ज्ञान बेचने का व्यवसाय नहीं करना चाहिए तथा अपने महत्त्वपूर्ण जीवन को निष्पाप बनाने का प्रयास करना चाहिए | स्वामीजी का मत था की गुरु के प्रति अटूट श्रध्दा होनी चाहिए, पर वह श्रध्दा अंध भकित नहीं हो बलिक समझ के साथ उत्पन्न होनी चाहिए |

विवेकानंदजी के अनुसार विद्यार्थी में विचारों की शुद्धता,ज्ञान की पिपासा,धैर्य,वचन और कर्म में शुद्धता इत्यादि गुणों की आवश्यकता है इनके अभाव में शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती है | जो शिक्षक स्वयं आध्यात्मिक अनुभव नहीं रखता,वह विद्यार्थी को क्या देगा? अच्छे शिक्षक को सही अर्थों में शिक्षार्थी का गुरु निर्देशक और आदर्श होना चाहिए | उसे निष्पाप होना चाहिए क्योंकि हृदय और आत्मा की शुद्धता के बिना न तो कोई ज्ञान दे सकता है और न कोई ले सकता है |

स्वामीजी के गुरु रामकृष्ण थे | उन्होंने स्वामीजी में आध्यात्मिक चेतना जगाई | उनके मत अनुसार शिक्षक का कार्य शिक्षार्थी के अंदर छिपी आध्यात्मिक चेतना को जगाना है | जिन शिक्षको को शिक्षण-कार्य में कोई आनन्द नहीं मिलता उनको यह कार्य कभी नहीं करना चाहिए | जिनके लिए शिक्षण उनका मिशन है वही शिक्षक विद्यार्थीर्या में आत्मविश्वास जगा पाते है | सच्चा शिक्षक वह है जो विद्यार्थी में असत्य से सत्य की ओर अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाए | स्वामीजी ने बताये गुरु-शिष्य सम्बन्ध में गुरु विद्वान होना,गुरु चरित्रवान होना,गुरु का शिष्य के प्रति पितृत्त्वपूर्ण व्यवहार होना, एवं शिक्षक-विद्यार्थी के सभी गुणों में शिक्षा मुकित का दर्शन होते है |

सारांश

स्वामी विवेकानंदजी की शिक्षा-प्रणालीभारत की दार्शनिक और आध्यात्मिक परम्परा के अनुरूप थी| महान आदर्शवादी होते हुए भी उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार अत्यधिक व्यावहारिक और यर्थाथवादी है| उनके शिक्षा सम्बन्धी तत्त्वों में शिक्षा की परिभाषा, उदेश्य, सिध्धांत, पाठ्यक्रम, शिक्षा की विधियाँ और गुरु-शिष्य सम्बन्ध सभी में शिक्षा मुकित का निर्दशन होता है|

संदर्भ सूचि

१. शर्मा, रामनाथ (१९९६). “प्रमुख भारतीय शिक्षा दार्शनिक”,एटलांटीक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली : पृ-६८
२. गोस्वामी, नवप्रभाकर (२००७). “शिक्षा दर्शन एवं उभरता भारतीय समाज”,ऐपोलो प्रकाशन; जयपुर,पृ-२७२
३. एलेक्स , शीलू मेरी (२००८). “शिक्षा दर्शन”,रजत प्रकाशन,नई दिल्ली ; पृ-१४३
४. माथुर, सावित्री (२००८). “शिक्षा दर्शन”, आस्था प्रकाशन,जयपुर ; पृ-१६३
५. श्रीवास्तव, मदनमोहन (२००७). “शिक्षा के दार्शनिक परिपेक्ष्य”,वंदना पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली; पृ-१७६